वर्ष-17 अंक-133 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, बुधवार 17 मई 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

सीएसए में डॉ. आर के यादव बने निदेशक प्रसार

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ बिजेन्द्र सिंह ने विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों में और अधिक गतिशीलता लाने के लिए डॉक्टर आरके यादव को विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार का दायित्व सौंपा है। अभी तक प्रसार निदेशालय में डॉक्टर आरके यादव आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्यों का निर्वहन कर रहे थे। निदेशक प्रसार डॉ आरके यादव ने बताया कि उनकी प्राथमिकता है कि कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों तक कृषि की नवीनतम एवं उच्च गुणवत्ता युक्त तकनीकीयों को कृषि वैज्ञानिकों के माध्यम से

हस्तांतरित कराना है। जिससे किसानों की आय बढ़े और वह स्वावलंबी हो आत्म निर्भर बने। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं एवं नवयुवकों को कृषि उद्यमिता में दक्ष बनाकर कृषि से जुड़े लघु कुटीर उद्योगों से जोड़कर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाएगा।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • बुधवार • 17 मई • 2023

ग्रटामिन सी को बढ़ाकर इम्युनिटी मजबूत करता है प्याज'

ुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि वेद्यालय से संवद्ध दलीप नगर कृषि केंद्र के वरिष्ठ उद्यान वैज्ञानिक डॉ. कुमार सिंह ने प्याज उत्पादक किसानों ए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने कहा प्याज की फसल किसानों की आर्थिक को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी यह तभी संभव होगा कि जव प्याज की उपरांत तकनीकी तथा भंडारण आदि वैज्ञानिक तरीके से की जाएं। उन्होंने कि प्याज औषधीय गुण की दृष्टि से लाभकारी होता है। शरीर की रोग क्षमता वढ़ाने को विटामिन सी की ा होती है और प्याज में मौजूद केमिकल्स शरीर में विटामिन सी को का काम करते हैं।

न्होंने वताया कि प्याज फसल के लगभग तेशत पौधों का ऊपरी भाग झुक जाने तथा पीली पड़ जाने के एक सप्ताह वाद खुदाई चाहिए। वर्तमान समय में क्षेत्र की ांश फसल लगभग पक कर तैयार है। उपरांत प्रवंधन में प्याज कंदों पर ढाई से 3 टर छोड़कर ऊपर की सूखी पत्तियों को ना चाहिए। इसके पश्चात सड़े, गले व रोग कंदों को हटाकर अलग कर देना चाहिए, कंदों के आकार के आधार पर ग्रेडिंग करें। र पर सड़न के कारण नुकसान विशेष रूप और जुलाई में भंडारण के प्रारंभिक महीने

> किसान प्याज का उचित भंडारण करके कमा सकते हैं अच्छी आय

में चरम पर होता है। उच्च नमी के साथ मिलकर उच्च तापमान नुकसान का परिणाम वनता है ,हालांकि प्याज के उचित ग्रेडिंग और गुणवत्ता एवं अच्छे वेंटिलेशन की स्थिति में सड़न के कारण नुकसान को कम कर सकते हैं। प्याज की पैकिंग के लिए जालीदार प्लास्टिक के वोरों का प्रयोग किया जाता है, जिससे हवा का पर्याप्त मात्रा में आवागमन वना रहे। प्याज आम तौर पर चार से छह महीने की अवधि के लिये मई से नवम्वर तक रखा जाता है । हालांकि, 50-90 फीसदी भंडारण नुकसान जीनोटाइप और भंडारण की परिस्थितियों के आधार पर देखा गया है। प्याज भंडारण का तापमान एवं आर्द्रता कंदों के वजन में कमी, कंदों का अंकुर निकलना, सड़ना तथा कंदो की गुणवत्ता को भंडारण में प्रभावित करता है। पारंपरिक भंडारण में भंडारित कंदों का वजन एवं अन्य हानि होती है। इसलिए उन्नत भंडार गृहों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। प्याज का उन्नत भंडार गृहों का निर्माण ऊपर उठे हुए प्लेटफार्म पर वनाया जाता है ताकि नीचे जमीन की नमी को रोका जा सके। भंडार गृह के अंदर तापमान को वढ़ने से रोकने के लिए छत में उपयुक्त सामग्री अथवा टाइल्स का प्रयोग करना चाहिए। वायु के पर्याप्त संचार के लिए भंडारण की तल तथा प्याज कंदों की दो तह के मध्य हवादार संरचना वनानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि किसान प्याज भण्डारण संरचना में मिलने वाले अनुदान के लिये जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। इसमें 250 कुन्तल भण्डारण क्षमता वाले संरचना पर 87500 रु. का अनुदान है, जिसका लाभ किसान ले सकते हैं। डॉ.अरुण कुमार सिंह ने किसानों से अपील की है कि वे भंडार गृह इस प्रकार वनाएं ताकि धूप सीधे कंदों पर न पड़े । भंडारण में कंदों के ढेर की चौड़ाई गर्मियों में 60 से 75 सेंटीमीटर, हल्के आर्द मौसम में 75 से 90 सेंटीमीटर तथा हल्के शुष्क मौसम में 90-120 सेंटीमीटर से अधिक नही होनी चाहिए। इसके साथ-साथ छोटे आकार के कंदों के ढेर की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर गर्म मौसम में रखी जाती है। जवकि वड़े कंदों को हल्के मौसम में 120 सेंटीमीटर तक ऊंचाई के ढेरों में रखा जा सकता है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 14 अंक : 311 कानपुर, बुधवार 17 मई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

किसान प्याज का उचित भण्डारण कर अच्छा मूल्य करें प्राप्त : डॉ अरुण

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह द्वारा प्याज उत्पादक किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ सिंह ने बताया कि वर्तमान समय में प्याज की फसल किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी। लेकिन यह तभी संभव होगा कि जब प्याज की खुदाई उपरांत तकनीकी तथा भंडारण आदि क्रियाएं वैज्ञानिक तरीके से की जाए। उन्होंने बताया कि प्याज फसल की लगभग 50त्न पौधों का ऊपरी भाग झुक जाने तथा पत्तियां पीली पड़ जाने के एक सप्ताह बाद खुदाई करनी चाहिए। वर्तमान समय में क्षेत्र की अधिकांश फसल लगभग पक कर तैयार है।कटाई उपरांत प्रबंधन में प्याज कंदो पर ढाई से 3 सेंटीमीटर छोड़कर ऊपर की सूखी पत्तियों को हटा देना चाहिए। इसके पश्चात सड़े,गले व रोग ग्रस्त कंदो को हटाकर अलग कर देना चाहिए, फिर कंदो के आकार के आधार पर ग्रेडिंग की जाती है। आम तौर पर, सड़न के कारण नुकसान विशेष रूप से जून और जुलाई में भंडारण के प्रारंभिक महीने में चरम पर होता हैं। उच्च नमी के साथ मिलकर उच्च तापमान

नुकसान का परिणाम बनता है ,हालांकि प्याज के उचित ग्रेडिंग और गुणवत्ता एवं अच्छे वेंटिलेशन की स्थिति में सड़न के कारण नुकसान को कम कर सकते हैं। प्याज की पैकिंग के लिए जालीदार प्लास्टिक के बोरा का प्रयोग किया जाता है, जिससे हवा का पर्याप्त मात्रा में आवागमन बना रहे। प्याज आम तौर पर चार से छह महीने की अवधि के लिये मई से नवम्बर तक रखा जाता है । हालांकि, 50-90 फीसदी भंडारण नुकसान जीनोटाइप और भंडारण की परिस्थितियों के आधार पर देखा गया है। प्याज भंडारण का तापमान एवं आर्द्रता कंदो के वजन में कमी, कंदो का अंकुर निकलना, सड़ना तथा कंदो की गुणवत्ता को भंडारण में प्रभावित करता है। पारंपरिक भंडारण में भंडारित कंदो का वजन एवं अन्य हानि होती है। इसलिए उन्नत भंडार गृहों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। प्याज का उन्नत भंडार गृहों का निर्माण ऊपर उठे हुए प्लेटफार्म पर बनाया जाता है। ताकि नीचे जमीन की नमी को रोका जा सके। भंडार गृह के अंदर तापमान को बढ़ने से रोकने के लिए छत में उपयुक्त सामग्री अथवा टाइल्स का प्रयोग करना चाहिए। तथा वायु के पर्याप्त संचार के लिए भंडारण की तल तथा प्याज कंदो कि दो तह के मध्य हवादार संरचना बनानी चाहिए। किसान भाई प्याज भण्डारण संरचना में मिलने वाले अनुदान के लिये जिला उद्यान अधिकारी के कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं। इसमें 250 कुन्तल भण्डारण क्षमता वाले संरचना पर रूपए 87500/ का अनुदान है, जिसका लाभ किसान भाई ले सकते हैं। डॉ अरुण कुमार सिंह ने किसान भाइयों से अपील की है कि वे भंडार गृह इस प्रकार बनाएं ताकि धूप सीधे कंदो पर न पड़े ।भंडारण में कंदो के ढेर की चौड़ाई गर्मियों में 60 से 75 सेंटीमीटर, हल्के आर्द्र मौसम में 75 से 90 सेंटीमीटर, तथा हल्के शुष्क मौसम की दशा में 90-120 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसके साथ-साथ छोटे आकार के कंदो के ढेर की ऊंचाई 100 सेंटीमीटर गर्म मौसम में रखी जाती है।

जबकि बड़े कंदो को हल्के मौसम में 120 सेंटीमीटर तक ऊंचाई के ढेरों में रखा जा सकता है। डॉ सिंह ने बताया कि प्याज औषधीय गुण की दृष्टि से काफी लाभकारी होता है। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए विटामिन सी की जरूरत होती है और प्याज में मौजूद फाइटोके मिकल्स शरीर में विटामिन सी को बढ़ाने का काम करते हैं। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने किसान भाइयों से अपील की है कि वे कोविड-19 के दृष्टिगत कृषि कार्य करते समय शारीरिक दूरी अवश्य बनाए रखें।

डॉ. आर के यादव बने डायरेक्टर एक्सटेंशन

KANPUR: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के डायरेक्टर आफ एक्सटेंशन में डॉ. आरके यादव को डायरेक्टर बनाया गया है. सीएसए वीसी डॉ. बिजेन्द्र सिंह ने सीएसए के कृषि विज्ञान केंद्रों में गतिशीलता लाने के लिए यह नियुक्ति की. डॉ. यादव ने बताया कि केवीके से किसानों की समस्याएं हल हो यह उनकी प्राथमिकता है.

दैनिक जागरण कानपुर, 17 मई, 2023

एक नजर में

आरके यादव बने सीएसए निदेशक प्रसार

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि का निदेशक प्रसार डा. आरके यादव को बनाया गया है। उनकी नियुक्ति कुलपति डा. बिजेन्द्र सिंह ने की है। कार्यभार संभालने के बाद डा. यादव ने अपनी प्राथमिकता में बताया कि कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों तक कृषि की नवीनतम एवं उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी को पहुंचाने ने का लक्ष्य है। इससे किसानों की आय बढ़ेगी। वि

पन

कल्याण

जासं, कानपुर

मंदिर पर

उपरिगामी पु

ही इसी साल

लोगों को सु

उन्हें जाम

मिल जाएगी।

रोड, कल्याण

डॉ. आरके यादव बने सीएसए के प्रसार निदेशक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ बिजेन्द्र सिंह ने डॉ. आरके यादव को विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार की जिम्मेदारी सौंपी है।

अब तक डॉ. यादव प्रसार निदेशालय में आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्य कर रहें थे।

डॉ. आरके यादव।

उन्होंने बताया विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों तक कृषि की तकनीकों को पहुंचाया जाए, जिससे किसानों की आय की आय बढ़ सके। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं और नवयुवकों को कृषि उद्यमिता में दक्ष बनाकर कृषि से जुड़े लघु कुटीर उद्योगों से जोड़कर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाएगा।

के ध

अमर उजाला कानपुर 17/05/2023

डॉ. आरके यादव बने निदेशक प्रसार

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह ने डॉ. आरके यादव को निदेशक प्रसार नियुक्त किया है। अभी तक डॉ. यादव निदेशालय में आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। (ब्यूरो)

... पानी में डूब गया।

हिंदुस्तान 17/05/2023

डॉ. आरके यादव बने सीएसए में निदेशक प्रसार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉ. बिजेंद्र सिंह ने सभी कृषि विज्ञान केंद्रों में अधिक गतिशीलता लाने के लिए डॉ. आरके यादव को निदेशक प्रसार नियुक्त किया है। अभी तक डॉ. यादव निदेशालय में आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्यरत थे।

आज
महानगर
कानपुर
17 मई 2023

सीएसए में डॉ. आर के यादव बने निदेशक प्रसार

कानपुर, 16 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ बिजेन्द्र सिंह ने विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों में और अधिक गतिशीलता लाने के लिए डॉ. आर.के यादव को विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार का दायित्व सौंपा है। अभी तक प्रसार निदेशालय में डॉ. आरके यादव आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्यों का निर्वहन कर रहे थे। निदेशक प्रसार डॉ आरके यादव ने बताया कि उनकी प्राथमिकता है कि कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से किसानों तक कृषि की नवीनतम एवं उज्ज गुणवत्ता युक्त तकनीकीयों को कृषि वैज्ञानिकों के माध्यम से हस्तांतरित कराना है। जिससे किसानों की आय बढ़े और वह स्वावलंबी हो आत्म निर्भर बने। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं एवं नवयुवकों को कृषि उद्यमिता में दक्ष बनाकर कृषि से जुड़े लघु कुटीर उद्योगों से जोड़कर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाएगा।